Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 20.11.15 मस्जिद बैतुल अहद जापान।

इस्लाम को फैलाने के लिए किसी तलवार की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम को फैलाने के उन लोगों की आवश्यकता है जिनका ख़ुदा तआला पर सम्पूर्ण विश्वास, आस्था एंव ईमान हो। इस्लाम को फैलाने के लिए उन लोगों की आवश्यकता है जिनकी इबादत के स्तर बुलन्द हों। इस्लाम को फैलाने के लिए उन लोगों की आवश्यकता है जो हत्या एंव आतंक के बजाए अपनी मानसिकता के विरुद्ध संघर्ष करके अपनी हालतों को सुधारने वाले हों।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित क़ुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमाई-

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ [٢٢:٤١]

ये वे लोग हैं जिन्हें यदि हम ज़मीन में प्रभुत्व प्रदान करें तो वे नमाज़ को क़ायम करते हैं तथा नेक बातों का आदेश देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और हर बात का परिणाम अल्लाह ही के हाथ में है।

अलहमदु लिल्लाह आज जापान की अहमदिया जमाअत को अपनी पहली मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली है। अल्लाह तआला इसके निर्माण को हर प्रकार से बरकत वाला फ़रमाए और आप लोग उस उद्देश्य को पूरा करने वाले हों जो मस्जिद बनाने का उद्देश्य होता है। अतः केवल मस्जिद बना लेना कोई ऐसी बात नहीं कि हम कह सकें कि जापान में आने का हमारा लक्ष्य पूरा हो गया। हमारा लक्ष्य तो तब पूरा होगा जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे और वह उद्देश्य यह है कि हमारा ख़ुदा तआला के साथ सम्बंध स्थापित हो और हम उसकी इबादत का हक़ अदा करने वाले हों, हम उसके बन्दों का हक़ अदा करने वाले हों तथा हम अपने कर्मों की हालतों को देखते हुए उसके ऊँचे स्तर प्राप्त करने वाले हों। हम इस्लाम के सुन्दर पैग़ाम को, इसकी सुन्दर शिक्षा को, इस क़ौम के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने वाले हों। जब जापान को धार्मिक स्वतंत्रता मिली तथा जापानियों की भी धर्म की ओर रूचि हुई तो इस्लाम की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। जब यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताई गई तो आपने जापानियों तक वास्तविक इस्लाम को पहुंचाने की अभिलाषा को बड़ी गम्भीरता से प्रकट फ़रमाया कि दूसरे मुसलमान तो वह्यी का द्वार बन्द करके अपने मज़हब को निर्जीव के समान बना चुके हैं। आपन बड़े खेद पूर्वक फ़रमाया कि दूसरे मुसलमान केवल अपने ऊपर ही अत्याचार नहीं करते, यह बात कह कर कि वह्यी का दरवाज़ा बन्द हो गया है बल्कि दूसरों को भी अपनी आस्था तथा दुष्कर्म दिखाकर इस्लाम में आने से रोकते हैं। उनके पास कौनसा हथियार है जिसके द्वारा अन्य धर्मों को नष्ट करना चाहते हैं। आपने अपने मानने वालों को कहा कि चाहिए कि इस जमाअत में कुछ लोग इस बात के लिए तैय्यार किए जाएँ जो प्रतिभा शील एंव साहसी हों। फिर आप अलैहिस्सलाम ने जापानियों में तबलीग़ के लिए किताब लिखने की इच्छा भी प्रकट की।

अतः आप अलैहिस्सलमा जिस प्रकार आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुपालन में आपके पैग़ाम को पहुंचाने आए थे, जापान भी इससे बाहर नहीं, जज़ायर भी इससे बाहर नहीं तथा शेष विश्व भी इससे बाहर नहीं। यह अल्लाह तआला की कृपा और उपकार है कि आप लोगों को इस देश में आने का अवसर मिला। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो इस बात पर खेद प्रकट कर रहे हैं कि दूसरे मुसलमानों ने जापान में इस्लाम को क्या फैलाना है? यह लोग तो अल्लाह तआला की वह्यी का द्वार बन्द करके इस्लाम को मुर्दा मज़हब बना चुके हैं और जापानियों को अथवा विश्व के किसी भी देश में रहने वालों को मरे हुए धर्म की क्या आवश्यकता है। आप फ़रमाते हैं कि यह तो तुम लोग हो जो इस्लाम के जीवित होने का प्रमाण दे सकते हो तथा इसकी विशेषताएँ दुनिया को बता सकते हो। जब अल्लाह तआला के साथ सम्बंध बनाने के रास्ते बन्द कर दिए तो मुसलमानों तथा अन्य धर्मों के मानने वालों में क्या अन्तर रह गया। यदि इस्लाम की प्रमुखता दुनिया पर साबित करनी है तो फिर अल्लाह तआला से जीवित सम्बंध स्थापित करके की जा सकती है। दुनिया को बताकर यह विशेषता प्रमाणित की जा

सकती है कि इस्लाम का ख़ुदा अब भी उससे बोलता है, जिससे वह करता है प्यार। अतः यह प्रमुखता प्रमाणित करने के लिए प्रत्येक को अल्लाह तआला के साथ सम्बंध जोड़ने की आवश्यकता है। इस्लाम को फैलाने के लिए किसी तलवार की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम को फैलाने के उन लोगों की आवश्यकता है जिनका ख़ुदा तआला पर सम्पूर्ण विश्वास, आस्था एंव ईमान हो। इस्लाम को फैलाने के लिए उन लोगों की आवश्यकता है जिनकी इबादत के स्तर बुलन्द हों। इस्लाम को फैलाने के लिए उन लोगों की आवश्यकता है जो हत्या एंव आतंक के बजाए अपनी मानसिकता के विरुद्ध संघर्ष करके अपनी हालतों को सुधारने वाले हों। अतः इसके अनुसार भी आज अहमदियों का अत्यधिक दायित्व है कि जहाँ अपनी इबादतों के स्तर बढ़ाएँ वहीं इस्लाम की शिक्षा के अनुसार अन्य लोगों को तबलीग़ करें।

अतः यह जो मस्जिद बनाई है तो इसका अधिकार इसे दें। इस अधिकार की पूर्ति के लिए इसे पाँच समय आबाद करें, इसका हक़ अदा करने के लिए अपनी इबादतों के स्तर बढ़ाएँ, इसका हक़ अदा करने के लिए अपने कर्मों का आत्मनिरीक्षण करें, इसका हक़ अदा करने के लिए तबलीग़ के क्षेत्र में विस्तार करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाया कि जहाँ इस्लाम का परिचय कराना हो तो वहाँ मस्जिद बना दो, तो तबलीग़ तथा परिचय के रास्ते खुलते चले जाएँगे। अतः यह मस्जिद आप पर दायित्व डाल रही है कि जहाँ एक ओर इबादतों के स्तर को ऊँचा करें वहीं अपने आपको तबलीग़ के लिए तैय्यार करें। अब उद्घाटन से पहले ही मीडिया ने इस मस्जिद की काफ़ी क्वेरेज भी दे दी है तथा एक शांति प्रिय इस्लाम का परिचय, इस संदर्भ में देश वासियों के सामने पेश किया है। अतः इस परिचय से लाभ प्राप्त करना अब यहाँ रहने वाले प्रत्येक अहमदी का काम है। जापानियों के लिए मस्जिद तो कोई नई चीज़ नहीं है। यहाँ, जैसे कि कहा जाता है कि लगभग सौ मस्जिदें हैं। तो हमारी मस्जिद के उद्घाटन का इतना महत्व क्यूँ? इस लिए कि साधारण मुसलमानों से हटकर इस्लाम का वास्तविक चित्रण हम करते हैं। वह सच्चा स्वरूप जो आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखाया और जिसके दिखाने के लिए इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आपके सच्चे ग़ुलाम को भेजा है। अतः इस रूप को दिखाने के लिए आपको भी अपने दायित्व का निर्वाह करना होगा तथा ये दायित्व अदा नहीं हो सकता जब तक आप केवल आस्था की दृढ़ता तक ही क़ायम न हों बल्कि कर्मों के उच्च स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करने वाले हों। आपस की मुहब्बत, प्यार और भाईचारे में बढ़ने वाले हों। जहाँ हमारे आक़ा व पथ प्रदर्शक सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र है, जहाँ आपके सच्चे ग़ुलाम की दृष्टि है। अपनी दृष्टि केवल हमें उस ओर फेरनी होगी। इसका वर्णन हमें क़ुर्आन-ए-करीम में जी मिलता है। अतः केवल यह कह देना कि अलहमदु लिल्लाह हमने ज़माने के इमाम को मान लिया है, अलहमदु लिल्लाह हम अहमदी हैं, काफ़ी नहीं है। जो आयत मैंने तिलावत की है उस में जिन बातों की ओर ध्यान दिलाया गया है, अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाया है कि उसके इस ज़माने में सम्बोधित अहमदी मुसलमान ही हैं क्यूँकि हम ही हैं जिन्होंने ज़माने के इमाम को माना है, हम ही हैं जिनमें ख़िलाफ़त का निज़ाम, दीन की दृढ़ता के लिए जारी है। एक अहमदी मुसलमान के लिए इस ज़माने के इमाम को मानने के लिए, ख़िलाफ़त से सम्बद्धता का दावा करने वाले के लिए, अल्लाह तआला ने कुछ मूल सिद्धांत बयान फ़रमाए कि एक तो नमाज़ों के क़याम की ओर ध्यान दो कि यह परम उद्देश्य है तुम्हारे जीवन का। यदि नमाज़ों की अदायगी नहीं, यदि इबादतों की ओर ध्यान नहीं तो फिर ये दावे भी ग़लत हैं कि हम वास्तविक मुसलमान हैं। ये दावे भी मिथ्य हैं कि हम दुनिया में क्रान्ति पैदा कर देंगे, ये दावे भी ग़लत हैं कि हमने आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मान लिया है क्यूँकि आपने तो अपने आने का उद्देश्य ही बन्दे को ख़ुदा तआला से जोड़ने का बताया है और फिर फ़रमाया है कि दूसरा उद्देश्य एक दूसरे के अधिकार देना है। इस आयत में भी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह तआला के वास्तविक बन्दों की विशेषता यह है कि वे ख़ुदा तआला से डरने वाले हैं, उसकी इबादतों का हक़ अदा करने वाले हैं। अपने माल में से भी, ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए, मानवता की भलाई एंव सहायता के लिए ख़र्च करने वाले हैं और केवल अपने जीवन में ही यह क्रान्ति पैदा नहीं करते बल्कि अपने नमूने दिखाकर दूसरों को भी अपने साथ मिलाते हैं, उन्हें भी बताते हैं कि जीवन का परम उद्देश्य क्या है। उन्हें बताते हैं कि शैतान से किस प्रकार बच कर रहना है। हम पर जो यह अल्लाह तआला का उपकार हुआ है, जबकि दूसरे मुसलमान बिखरे पड़े हैं, उनके पास कोई आवाज़ नहीं है जो उन्हें एक हाथ की ओर बुलाए। हमें तो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का सौभाग्य देकर आपके बाद आपके द्वारा जारी ख़िलाफ़त के निज़ाम के द्वारा वह दृढ़ता प्रदान की है कि हम एक पुकार पर उठने और बैठने वाले हैं। दृढ़ता केवल शासन की प्राप्ति ही नहीं है बल्कि एक रोअब (प्रताप) का प्रदर्शन होना भी है तथा मन शांति का प्राप्त होना भी है। इन्शाअल्लाह तआला वह समय जी आएगा जब सरकारें भी हज़रत

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़लामी में आकर सच्चे इस्लाम को समझेंगी। परन्तु इस समय भी दुनिया अब हमारी ओर देखने लगी है कि सच्चे इस्लाम की शिक्षा बताओ। अतः यह भी एक प्रकार की दृढ़ता है तथा धाक है जो अब दुनिया पर अल्लाह तआला डाल रहा है परन्तु इससे लाभान्वित होने वाले वही होंगे जो ख़ुदा तआला की बात की ओर ध्यान देने वाले हों। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस कृपा के पात्र बनने के लिए नेकियों पर स्थापित हो जाओ तथा इसको फैलाओ और बुराईयों से बचो तथा दूसरों को बचाओ। अतः जब तक इस पर क़ायम रहोगे, इस मूल सिद्धांत को पकड़े रहोगे, उन्नतियाँ करते चले जाओगे।

अतः प्रत्येक अहमदी को सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि अपने कर्मों के सुधार में उन्नति करने की ओर ध्यान देता चला जाए तब्दी दुनिया को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे और यही चीज़ फिर उस दृढ़ता का भी कारण बनेगी जब सरकारें भी इस सच्ची शिक्षा के आधीन होकर आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आएँगी। अतः अत्यंत विशाल उद्देश्य की प्राप्ति की अल्लाह तआला मुसलमानों को शुभ सूचना दे रहा है। अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानें, अपने स्वार्थ की पूर्ति के बजाए अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयत्न करें। आपस में प्यार और मुहब्बत के साथ रहें और इस प्यार और मुहब्बत को इस समाज में भी फैलाएँ। अपने भीतर वे गुण उत्पन्न करें जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है। केवल मस्जिद बनने से वे गुण पैदा नहीं हो जाएँगे बल्कि इसके लिए प्रयास करने होंगे। इन विशेषताओं का ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन में एक स्थान पर इस प्रकार वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाता है कि

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ [۹:۱۱۲]

अनुवाद-तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, ईशस्तुति करने वाले, ख़ुदा की राह में भ्रमण करने वाले, रुकूअ करने वाले, सजदा करने वाले, नेक बातों का आदेश देने वाले तथा बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह के द्वारा निर्धारित सीमाओं की सुरक्षा करने वाले, सब सच्चे मोमिन हैं और तू मोमिनों को शुभ समाचार दे दे।

अतः जैसे कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एक मनुष्य के परम निष्ठावान बनने के लिए पहली शर्त यह है कि वह तौबा करे अर्थात अपने पापों को स्वीकार करे तथा पापों को स्वीकार करते हुए सम्पूर्ण रूप से उनसे बचने की प्रतिज्ञा करे। पाप केवल बड़े बड़े गुनाह नहीं हैं बल्कि छोटी छोटी ग़लतियाँ जो निज़ाम में बाधा उत्पन्न करती हैं वे भी पाप बन जाते हैं और जब इस संकल्प पर दृढ़ हो जाएँ तो फिर ख़ुदा तआला की इबादत का हक़ अदा करते हुए उसकी इबादत करना एक मोमिन का कर्तव्य है। अल्लाह तआला की इच्छानुसार अपने आपको चलाना एक मोमिन का कर्तव्य है और ख़ुदा तआला की इच्छा क्या है? जैसा कि मैं पहले भी इसकी चर्चा कर आया हूँ कि ख़ुदा तआला की इच्छा यह है कि इंसान ख़ुदा तआला की इबादत करे। जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

अर्थात- मैंने जिनों और इंसानों को केवल अपनी इबादत (उपासना एंव आज्ञा पालन) के लिए पैदा किया है। इस प्रकार न तो अमीरों तथा व्यवसायी वर्ग के लिए कोई छूट है कि इबादत से बाहर हों, न ही साधारण लोगों तथा निर्धनों के लिए कोई छूट है कि इबादत में सुस्ती करें।

अल्लाह तआला के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करते हुए, अपने स्वाभिमान को पीछे रखते हुए, अपने सम्मान को भूलते हुए, अपने आदर को पीछे डालते हुए, उसके आदेशों का पालन करते हुए, निज़ाम की पाबन्दी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है तथा निज़ाम का आज्ञा पालन भी इस लिए कि अल्लाह तआला का आदेश है। यह करना, यह भी अल्लाह तआला की निकटता प्रदान करता है। अतः सजदे अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए होते हैं तथा उस समय सम्पूर्ण होते हैं जब मनुष्य में विनम्रता पैदा होती है। इसकी तलाश हमें करनी चाहिए। अतः जब ये विनम्र सजदों का वरदान हमें मिल जाए, ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्ति की ओर हमारा ध्यान हो तो फिर अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ दूसरों को भी नेक बातों का उपदेश देकर ख़ुदा तआला के निकट लाएँ। फिर तबलीग़ की ओर ध्यान दें, दूसरों को भी जो दुनिया में डूब रहे हैं ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाला बनाएँ, दूसरों को भी गुनाहों में डूबने तथा आग में गिरने से बचाएँ। आज यही प्रत्येक अहमदी का काम है, यह दायित्व है हमारा कि दुनिया को ख़ुदा तआला की अप्रसन्नता से बचाएँ और फिर यह भी याद रक्खें कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सच्चे मोमिन अल्लाह द्वारा निर्धारित सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। इन बातों पर नज़र रक्खें और

इनकी रक्षा करें अर्थात इनके अनुसार अनुपालन का पूरी पाबन्दी के साथ प्रयास करें जो अल्लाह तआला ने बताईं हैं बातें, जो क़ुर्आन-ए-करीम में बयान हुई हैं, उन बातों की रक्षा करना भी काम है जो अल्लाह तआला ने और उसके रसूल ने बताई हैं, उन बातों की ओर भी ध्यान दें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताई हैं और अपनी जमाअत से अपेक्षा की है। उन बातों की ओर भी ध्यान दें, उन्हें सुनें तथा उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें जो ख़लीफ़-ए-वक़्त की ओर से आपको कही जाती हैं। अपने ईमान और अमल की रक्षा करें। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हमें ख़िलाफ़त के इनाम से सुशोभित किया है, इसका मान रक्खें कि अल्लाह तआला ने दीन की दृढ़ता के लिए यह अनिवार्य किया है तथा इसके द्वारा मोमिनों को शुभ सूचना दी है जो इन समस्त बातों के अनुसार कर्म करने वाले हैं। अतः आत्म निरीक्षण करें तथा उन लोगों में शामिल हों जिनके विषय में सच्चा मोमिन होने की ख़ुदा तआला ने शुभ सूचना दी है। अल्लाह तआला का यह उपकार है कि उसने इस युग के अविष्कारों को भी हमारे आधीन कर दिया है। जमाअत लाखों डालर प्रति वर्ष ख़र्च करती है एम टी ए पर। यह तबलीग़ और तर्बियत का उत्तम साधन है तथा सबसे बढ़कर ख़लीफ़-ए-वक़्त से सज़र्क का माध्यम है। अतः माँ-बाप ने यदि अपनी अगली नस्लों को संभालना है तो स्वयं भी ख़लीफ़-ए-वक़्त के प्रोग्रामों के साथ अपने आपको जोड़ें तथा अपने बच्चों को भी जोड़ें। कई ग़ैर लोग जी मुझे कई बार लिखते हैं कि आपका खुत्बः अथवा अमुक प्रोग्राम सुनकर हमें दीन की वास्तविकता का ज्ञान हुआ। तो अहमदी को तो दीन सीखने तथा सुधार के लिए तथा एकता स्थापित करने के लिए ख़लीफ़-ए-वक़्त के प्रोग्रामों के साथ जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। जापानी अहमदियों से भी मैं कहूंगा कि दीन सीखें तथा अपने ईमान एंव विवेक में प्रगति करें। यह न देखें कि अमुक व्यक्ति जो जन्म से अहमदी तथा पुराना अहमदी है, कैसा है? यदि वह कमज़ोर है दीन के विषय में, तो आप उसके लिए हिदायत का कारण बन जाएँ। पहले भी मैं कह चुका हूँ कई बार कि अल्लाह तआला किसी का रिश्तेदार नहीं है, जो नेक कर्म करेगा, अपनी इबादतों के स्तर बुलन्द करेगा, अल्लाह तआला का समर्थन व सहायता फिर उसके साथ होगी। अल्लाह तआला करे कि प्रत्येक अहमदी इस वास्तविकता को सामने रखते हुए अपना जीवन व्यतीत करे और यह मस्जिद प्रत्येक अहमदी के ईमान में भी तथा उसकी सक्रियता में भी एक क्रान्तिकारी बदलाव पैदा करने वाली हो। केवल अस्थाई रूचि एंव भावना से मस्जिद बनाने वाले न हों बल्कि वास्तव में इसका हक़ अदा करने वाले हों।

मस्जिद के सज़्बंध में कुछ आंकड़े भी पेश कर देता हूँ। मस्जिद की यह ज़मीन, इसका कुल क्षेत्रफल एक हज़ार वर्ग मीटर है। दो मंज़िल का भवन है, यह इस क्षेत्र की मेन सड़क के बिल्कुल ऊपर है। यह सड़क जो है इस क्षेत्र की समस्त बड़ी सड़कों को आपस में मिलाती है। हाई-वे से बाहर जाने वाले रास्ते के बहुत निकट है, बल्कि दो हाई-वेज़ लगते हैं इसके साथ। निकट ही रेलवे स्टेशन स्थित है। इस रेलवे स्टेशन से नागोया के इन्टर नैशनल एयर पोर्ट तक सीधी ट्रेन जाती है। इस दृष्टि से भी इसमें बड़ी सुविधाएँ हैं। मस्जिद का नाम बैतुल अहद मैंने रक्खा था। यहाँ तबर्रुक के लिए क़ादियान तथा दारुल मसीह की ईंटें भी लगी हैं। इस भवन की पहली मंज़िल पर मस्जिद का बड़ा हॉल है जहाँ पाँच सौ से अधिक नमाज़ियों के लिए स्थान उपलब्ध है तथा ऊपर की मंज़िल में लजना हॉल है और सहन है। कुछ वहाँ लगाकर, छोटी सी सायबान लगाकर समारोह जी किए जा सकते हैं और उसको यदि सज़्ज़लित कर लिया जाए तो सात आठ सौ नमाज़ी एक ही समय में नमाज़ पढ़ सकते हैं। दूसरी मंज़िल पर दफ़तर जी है, लाईब्रेरी है, छोटा सा लजना हॉल है, मुरब्बी हाउस है, गैस्ट रूमज़ हैं। इस मस्जिद का भवन ख़रीदा तो गया था परन्तु बाद में इसमें बदलाव किए गए। इसके कारण चारों कोनों पर, इसको मस्जिद का रूप देने के लिए मिनारे भी बनाए गए और गुज़्बद भी बनाया गया और यह सड़क पर होने के कारण लोगों का ध्यान आकर्षित करने का बड़ा केन्द्र बना हुआ है। यह मस्जिद न केवल जापान की बल्कि उत्तर पूर्वी देश जो हैं, चीन, कोरिया, हांग कांग, ताईवान इत्यादि में जमाअत की पहली मस्जिद है। अल्लाह तआल इसको शेष स्थानों पर भी रास्ते खोलने का माध्यम बनाए तथा वहाँ भी जमाअतें प्रगति करें और मस्जिदें बनाने वाली हों।

यह भवन ख़रीद कर इसको मस्जिद में बदला गया था। 2013 में यह भवन ख़रीदा गया था जून में, और इसकी ख़रीद तथा निर्माण आदि पर लगभग तेरह करोड़ उन्हत्तर लाख येन की राशि ख़र्च हुई है। यह लगभग बन जाती है कोई बारह लाख डालर के लगभग। इसमें से लगभग आधे से कुछ कम तो केन्द्रीय ग्रांट थी, शेष लोगों ने, यहाँ की छोटी सी जमाअत है, बड़ी क़ुरबानी करके इस मस्जिद के निर्माण में अपना योगदान दिया है, अल्लाह तआला इन सबको प्रतिफल प्रदान करे। इसके लिए कुछ असाधारण क़ुरबानी की घटनाएँ भी हुई हैं, माल की क़ुरबानी की। जब इसकी तहरीक की गई, मस्जिद बनाने की, मस्जिद बैतुल अहद की, तो एक अहमदी कहते हैं कि जब उनको चन्दा वसूल करने वाले ने या सैक्रेट्री माल ने, जिसने भी प्रेरणा दी,

तो यह अहमदी उनको अपने साथ ले गए कि मेरे साथ घर चलें और जो कुछ है मैं पेश कर देता हूँ। इनकी पत्नि जापानी हैं, जब वे गए और चन्दे के विषय में बताया तो उन्होंने विभिन्न डिब्बे लाकर सामने रख दिए और जब उनमें से धन राशि निकाली गई या देखा गया तो ये सारी चीज़ें लगभग दस हज़ार डालर मूल्य की थीं। इसी प्रकार जापान के सदर साहब ने यह भी लिखा कि कुछ लोगों की प्रस्थितियों से हम अवगत थे कि वे अधिक सञ्पन्न नहीं हैं परन्तु उन्होंने अपने ख़र्चों को सीमित करके अल्लाह तआला के घर के निर्माण के लिए क़ुर्बानी का सौभाग्य प्राप्त किया तथा उनके द्वारा जो एक समय में उन्होंने धन राशि देनी थी उसमें भी दो ढाई लाख रुपए की कमी आ रही थी परन्तु दोस्तों ने बड़ा बलिदान देकर, कठिनाई उठाकर यह धन राशि अदा की। जो पहले दे चुके थे उन्होंने भी पूरा प्रयास किया तथा जो कुछ उपस्थित था लाकर पेश कर दिया और इस प्रकार लगभग सात लाख डालर जमा हो गए। एक नौजवान विद्यार्थी पार्ट टाईम जॉब कर रहे हैं, अस्सी हज़ार येन उनको वेतन मिलता है। उसमें से पचास हज़ार येन प्रति माह मस्जिद में देने के लिए अभी तक पेश करने की तौफ़ीक़ पा रहे हैं अथवा जब तक रिपोर्ट थी, उस समय तक देते रहे। अहमदी बच्चे हैं, बड़ी क़ुर्बानियाँ करने वाले। अपना जेब ख़र्च लाकर मस्जिद के लिए चन्दा पेश करते रहे और बच्चों में सबसे अधिक क़ुर्बानी एक बच्ची ने की है जिसने विभिन्न करंसियों में, विभिन्न समय में जो उसको उपहार मिलते रहे अपने बड़ों से, वे दे दिए और इस प्रकार जो धन राशि उसने जमा की हुई थी वह एकत्र की गई तो लगभग नौ हज़ार डालर की धन राशि हुई, वह उसने पेश कर दी। अहमदी महिलाओं ने बड़ी क़ुर्बानियाँ कीं, अपने आभूषण पेश कर दिए तथा एक महिला ने तो अपनी चौबीस चूड़ियाँ पेश कर दीं। फिर एक महिला हैं उन्होंने अपने आभूषण, जो उनकी माता की ओर से मिले थे, वे दे दिए। एक महिला जो पाकिस्तान से आई हैं उन्होंने अपने आभूषणों का नया सैट मस्जिद के लिए पेश कर दिया जो उन्होंने जनवरी में ही अपनी बेटी की शादी के लिए ख़रीदा था। अल्लाह तआला इन सभी क़ुर्बानी करने वालों को अपने पास से अत्यधिक प्रदान करे, इनके मालों में बरकत दे, इनकी जानों में बरकत दे, इन्हें ईमान और यक़ीन में बढ़ाता चला जाए तथा इन सबको इस मस्जिद का हक़ अदा करने वाला बनाए। यह मस्जिद जहाँ इनकी इबादत के स्तर बुलन्द करे वहीं आपस में प्यार मुहब्बत बढ़ाने वाले भी हों ये, और इस मुहब्बत और प्यार को देखकर दूसरों का भी इस ओर ध्यान आकर्षित हो।

ग़ैर अज़-जमाअत के लोगों ने भी बड़े प्रेम एंव निष्ठा का प्रदर्शन किया है। एक जापानी दोस्त ने अपना एक बड़ा घर जो तीन मंज़िल का घर है, जमाअत को पेश कर दिया कि अपने मेहमान इसमें ठहराएँ। इसी प्रकार मस्जिद के पड़ौसियों को जब पता चला कि यहाँ मस्जिद के उद्घाटन के लिए अधिक मात्रा में मेहमानों के आने की संभावना है तो उन्होंने जमाअत के लिए अपनी पार्किंग का स्थान दे दिया। साधारणतः जापान के लोग किसी भी भवन के उद्घाटन के अवसर पर उस भवन को बहुमूल्य फूलों से सजाते हैं। जब दो जापानी दोस्तों को पता चला कि जापान की अहमदिया जमाअत की एक मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है तो उन्होंने कहा कि वे मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर मस्जिद को फूलों से सजाना चाहते हैं। अतः उन्होंने पूरी सहायता की। मस्जिद का रजिस्ट्रेशन, एक ग़ैर मुस्लिम वकील के सहयोग का भी बयान कर दूँ, उन्होंने बड़ा काम किया। ये क़ानूनी समस्याओं में सहयोग करते रहे, एक्योन्जिमा साहब। निःस्वार्थ भाव से उन्होंने सहायता की, उनके काम की फ़ीस कम से कम लगभग बीस हज़ार डालर बनती है परन्तु उनका कहना था कि अहमदिया जमाअत के जापान पर उपकार हैं और इसके बदले में यह काम बिना फ़ीस के करूंगा, अतः उन्होंने कोई फ़ीस नहीं ली। समाचार पत्रों तथा मीडिया में भी इसकी चर्चा है जैसा कि मैं आरञ्भ में कह चुका हूँ, काफ़ी चर्चा है, सभी बड़े समाचार पत्र, विज़्यात टी वी चैनलों के द्वारा परिचय हो चुका है।

अतः यह प्रभाव है अहमदिया जमाअत का जो अन्य वर्गों पर क़ायम है कि शांति प्रिय एंव सलामती फैलाने वाले इस्लाम के प्रतिनिधि हैं, समाज सेवा करते हैं। इसको स्थापित रखना तथा इस प्रभाव को बढ़ाना, यहाँ के रहने वाले प्रत्येक अहमदी का काम है। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि इस वास्तविकता को प्रत्येक अहमदी फैलाने वाला भी हो कि इस्लाम मुहब्बत और सलामती का मज़हब है और हमारी मस्जिदें इसका प्रतीक हैं ताकि इस क़ौम में इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम फैलाने के रास्ते विस्तृत होते चले जाएँ और यह क़ौम भी उन भाग्य शाली लोगों में शामिल हो जाए जो अपने पैदा करने वाले को पहचानने वालें हैं और मानवता के प्रति परोपकारी हज़रत मुहञ्मद रसूलुल्लाह सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर को समझने वाली हो। आमीन